

मजहब नहीं सिखाता अपास में बैर रखना

Mazhab nahi sikhata aapas mein bair rakhna

निबंध नंबर :- 01

अच्छाई हमेशा अच्छाई रहती है। उसका मूल स्वरूप-स्वभाव कभी विकृत नहीं हुआ करता। उस पर किसी एक व्यक्ति या धर्म-जाति का अधिकार भी नहीं हुआ करता। अपने मूल स्वरूप में मजहब भी एक अच्छाई का ही नाम है। मजहब, धर्म, फिरका, संप्रदाय और पंथ आदि सभी भाववाचक संज्ञाएं एक ही पवित्र भाव और अर्थ को प्रकट करती हैं। सभी का व्यापक अर्थ उच्च मानवीय आदर्शों और आस्थाओं से अनुप्राणित होकर विभिन्न नामों वाले एक ही ईश्वर को हाजिर-नाजिर मान सत्कर्म करना और समग्र रूप से अच्छा बनना है। ऐसे कर्म कि जिनके करने से सारी मानवता ही नहीं, प्राणी मात्र और जड़ पदार्थों का भी कल्याण हो सके। इस मूल विचार से हटकर संकीर्ण-संकुचित हो जाने वाला भाव मजहब-धर्म आदि कुछ न होकर महज स्वार्थ एवं शैतान हुआ करता है। सभी मजहबों की बुनियादी अवधारणा शायद यही है।

मजहब, धर्म, फिरका, संप्रदाय और पंथ वह नहीं होता कि जो मात्र बाह्य आचार ही सिखाता है और इस प्रकार एक मनुष्य को दूसरे से दूर ले जाता है। मजहब और धर्म कच्चे धाके की डोर भी नहीं हो कि जो किसी के स्पर्श मात्र से टूटकर बिखर जाएं या किसी वस्तु का धुआं मात्र लगाने से ही अपवित्र होने की सनसनी पैदा कर दें। मजहब और धर्म तो अपने-आप में इतने पवित्र, महान और शक्तिशाली हुआ करते हैं कि उनका स्पर्श पाकर अपवित्र भी पवित्र बन जाया करता है। मजहब-धर्म ईंट-गारे के बने हुए भवन भी नहीं हैं कि जिनकी क्षति उदात्त मानवीय भावनाओं की क्षति हो और चारों तरफ ऐसा कहकर बावला खड़ा किया जाए। नहीं, धर्म मजहब आदि इस प्रकार की समस्थ स्थूलताओं, बाह्यचारों से ऊपर हुआ करते हैं। ऊपर रहने वाले धर्म-मजहब ही जीवित रहकर अपने अनुयायियों के लिए प्रेरणा-स्त्रोत भी बने रहते हैं। अन्यथा अपनी ही भीतरी दुर्बलताओं से नष्ट हो जाया करते हैं। अपने अनुयायियों के नाश के कारण भी बना करते हैं।

कभी भी धर्म या मजहब हमें अपने को उच्च या श्रेष्ठ समझने, दूसरों को नीच या हीन समझकर भेद-भाव करने की शिक्षा नहीं देता। सभी मजहब समानता के पक्षपाती हैं। सभी के सुख-दुख को समान समझ उनके दुखों को भरसक दूर करने की प्रेरणा देते हैं। वस्तुतः मानवता, अपनी जातीयता और राष्ट्रीयता ही मजहब, धर्म और पंथ हुआ करती है। जो ऐसा नहीं समझते, उन्हें किसी देश तो क्या इस धरती पर भी बने रहने का अधिकार नहीं है। बड़े खेद की बात है कि आज इन व्यापक और पवित्र भाववाचक संज्ञाओं की गलत-शलत व्याख्याएं करके कुछ लोग स्वयं तो नाहक परेशान होते ही रहते हैं, दूसरों के लिए भी विनाश एवं परेशानियों की सामग्री जुटाते रहते हैं। ऐसे लोगों का प्रत्येक स्तर पर बहिष्कार और कठोर दमन परम आवश्यक है। उन्हें जड़-मूल से मिटा दिया जाना चाहिए।

हर समझदार व्यक्ति ने धर्म-मजहब की वास्तविक मर्यादा को समझ-बूझकर प्रेम और भाईचारे का ही संदेश दिया है। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में इस तथ्य को पहचानकर ही स्वर्गीय अलामा इकबाल ने अपनी काव्यमयी वाणी में यह उचित संदेश दिया था :

‘मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।

हिंदी हैं, हम वतन हैं, हिंदोस्ता हमारा।’

आज भी इस सूक्ति को सत्य-संभावित मानकर इसके अनुसार आचरण करके ही देश-जाति में शांति-सुरक्षा स्थापित की जा सकती है।

निबंध नंबर :- 02

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

Mazhab nahi Sikhata aapas mein bair rakhna

संकेत—बिंदु सभी मजहब एक।

सभी धर्मों का आधारभूत तत्व।

धर्म के सच्चे स्वरूप को न पहचानने से हानि।

सच्चे धर्म का अर्थ, मित्रता व सहयोग मार्ग।

सभी धर्म, सभी मजहब एक परम सत्य को जानने, पहचानने और उस तक पहुँचने का रास्ते हैं जिनमें कोई टकराव नहीं, कोई विरोध नहीं। संसार का कोई भी धर्म, मत या मजहब मनुष्य को ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, शत्रुता, हिंसा का पाठ नहीं पढ़ाता। संपूर्ण मानव जाति का कल्याण, सत्याचरण, प्रेम और मैत्री, सेवा, दया, परोपकार, करुणा व सहयोग सभी धर्मों के आधारभूत तत्व हैं। इस मूल बात को भूलकर फिर क्यों लोग मजहबी टकराव पैदा कर देश-समाज की शांति को भंग करते हैं? क्यों एक-दूसरे के वैरी हो जाते हैं? ऐसा वे ही लोग करते हैं जो या तो धर्म के सच्चे स्वरूप को पहचानते ही नहीं हैं या अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए लोगों में धार्मिक उन्माद पैदा कर अपना मतलब और महत्त्वाकांक्षा सिद्ध करते हैं। मजहबी कट्टरपन के उन्माद में लोग एक-दूसरे का गला काटने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे में लोग धर्म या मजहब का सच्चा अर्थ मूल जाते हैं। धर्म तो मनुष्य को उदार या विनम्र बनाता है, उसे सभ्य और सुसंस्कृत करता है। धर्म तोड़ने का नहीं जोड़ने का काम करता है। यह आपसी मनमटाव, वैर का मार्ग नहीं बल्कि मित्रता और सहयोग का मार्ग दिखाता है। कोई धर्म ऊँचा या नीचा कैसे हो सकता है जब सबकी मूल शिक्षा एक ही है। किसी प्रसिद्ध शायर ने सत्य ही कहा है—'मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।